Dr. Sunil Kr. Suman
Assistant Professor (Guest)
D.B. college Jaynagar
Dept. of Psychology

Study Material
B.A. Part-1 (H)
Paper - 1st
Date - 30-04-20

Theories of Emotion (1)

संवेग के सिद्धांत

(1) जेम्स - लांजे सिद्धांत (James - Lange Theory) :- इस सिद्धांत का प्रतिपादन अमरीकी मनोवैज्ञानिकों के विलियम जेम्स (William James) तथा डेनिस शरीर क्रिया वैज्ञानिक कार्ल-लांजे (Carl - Lange) ने स्वतंत्र रूप से 1880 में किया। इन दोनों के विचार संवेग के संबंध में एक था अतः इस सिद्धांत को जेम्स लांजे सिद्धांत कहा गया।

इस सिद्धांत की व्याख्या सामान्य बोध (common sense) से विपरीत है। सामान्यतः हम देखते हैं कि यदि कोई शेर हमारे सामने आ जाए तो हम डर जाते हैं और भाग जाते हैं। अर्थात पहले संवेगात्मक अनुभूति (Emotional Experience) होता है। बाद में संवेगात्मक व्यवहार (Emotional Behaviour), जबकि जेम्स-लांजे के सिद्धांत में हम यदि किसी शेर या जंगली जानवर को देखकर भाग जाते हैं, इसलिए डर जाते हैं। अर्थात पहले संवेगात्मक व्यवहार होता है तथा इसके बाद संवेगात्मक अनुभूति होती है। या हम यह कह सकते हैं कि यदि हम कह सकते हैं कि यदि हम किसी शेर या जंगली जानवर को देखकर नहीं भागेंगे तो हमें डर की अनुभूति भी नहीं होगी। जेम्स-लांजे ~~का समर्थन~~ सिद्धांत का समर्थन कुछ ऐसे अध्ययनों द्वारा हुआ जो आनन पुनर्निवेशन प्राक्कल्पना (Facial ~~Facebook~~ Feedback hypothesses) के क्षेत्र में लायर्ड (Laird 1984) तथा मैत्सुमोटो (~~Mat~~ Matsumato) द्वारा किए गए।

P.T.O

Scanned with CamScanner

कैनन-बार्ड सिद्धांत (Cannon Bard Theory):-

इस सिद्धांत का प्रतिपादन मूलतः कैनन (Cannon-1927) द्वारा किया गया। बाद में बार्ड (Bard 1934) ने इसका अपने अध्ययन में एवं शोधों के आधार पर समर्थन किया इस सिद्धांत को कैनन-बार्ड सिद्धांत कहते हैं।

इस सिद्धांत के अनुसार संवेग का कारण हाइपोथैलेमस (Hypothalamus) है। जो केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र (Central Nervous System) के भाग प्रमस्तिष्क (Cerebrum) तथा थैलेमस (Thalamus) के नीचे स्थित है। इसलिए इस सिद्धांत को हाइपोथैलेमिक सिद्धांत (Hypothalamic Theory) या थैलेमिक सिद्धांत (Thalamic Theory) या केन्द्रिय सिद्धांत (Central Theory) भी कहते है।

इस सिद्धांत के अनुसार संवेगिक व्यवहार तथा संवेगिक अनुभूति दोनों एक साथ ही होते हैं न कि संवेगिक परिवर्तन या व्यवहार पर संवेगिक अनुभूति निर्भर करती है। जैसा की जेम्स लांजे के सिद्धांत में कहा गया है। कैनन-बार्ड के सिद्धांत के अनुसार सर्वप्रथम-

(i) संवेग उत्पन्न होने के लिए किसी उद्दीपक द्वारा ज्ञानेन्द्रिय का उत्तेजित होना आवश्यक है।

(ii) ज्ञानेन्द्रियों से तंत्रिका आवेग हाइपोथैलेमस या थैलेमस से होता हुआ प्रमस्तिष्क वल्क (Cerebral Cortex) में पहुँचता है।

(iii) प्रमस्तिष्क वल्क हाइपोथैलेमस से अपना नियंत्रण कम कर देता है। तथा कुछ विशेष परिस्थिति में एक तंत्रिका आवेगों को मस्तिष्क में भेजता है जिनकी अभिव्याक्ति उत्पत्ति विकल्प में होती है।

(iv) परिणामस्वरूप हाइपोथैलेमस पूर्ण रूप से क्रियाशील हो जाता है।

Scanned with CamScanner

(v) हाईपोथैलेमस के क्रियाशील होने पर तंत्रिका आवेग दो दिशा में अर्थात ऊपर की ओर मस्तिष्क वल्क में तथा नीचे की दिशा में अन्तरांग (visceral organs) तथा बाह्य अंगों के की मांसपेशियों तक एक साथ जाते हैं। जिसके परिणाम स्वरूप संवेगात्मक अनुभूति तथा व्यवहार एक साथ होता है।

Scanned with CamScanner